14

कहानी उत्सव

महेंद्र कुमार मिश्रा*

आपने अनेक उत्सव देखे-सुने होंगे। कई उत्सवों के बारे में पढ़ा होगा। लेकिन क्या आपको कहानी सुनने-सुनाने के उत्सव के बारे में जानकारी है? कहानी उत्सव उड़ीसा में मनाया जाता है। जिसमें बच्चे, शिक्षक, अभिभावक और समुदाय के लोग भाग लेते हैं। यह उत्सव कैसे मनाया जाता है? इसमें कौन भाग लेते हैं? जानने के लिए पढ़िए यह लेख।

सर्वशिक्षा अभियान के अंतर्गत देशभर में शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। विभिन्न राज्यों में कई नवाचार कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं।

उड़ीसा में सर्वशिक्षा अभियान के अंतर्गत सन् 2007 से एक कार्यक्रम की शुरुआत की गई है– सृजन! 'सृजन', कार्यक्रम के अंतर्गत अनेक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है, जिनमें बच्चे, विद्यालय तथा समुदाय के लोग भाग लेते हैं। इन्हीं गतिविधियों में से एक प्रमुख गतिविधि है– कहानी उत्सव (Story Telling Festival)।

'कहानी उत्सव', एक सरल और सहज कार्यक्रम है, जिसमें स्थानीय कहानी सुनानेवाले (Community Story Teller) जिन्हें 'कथावाचक' या कथा बाँचनेवाले भी कहते हैं, बच्चे, उनके माता-पिता और समुदाय के अन्य लोग भी भाग लेते हैं। इसके लिए जो प्रक्रिया अपनाई जाती है, वह इस प्रकार है–

जिस गाँव में कहानी उत्सव आयोजित करना है, उसी गाँव व समुदाय के कुछ कथावाचकों का स्कूल के मुख्याध्यापक और अध्यापकगण मिलकर चयन करते हैं। ग्राम पंचायत समिति के सदस्य इस काम में मदद करते हैं। कथावाचक, संगीतकार और कलाकारों का चुनाव होने के उपरांत उनसे कहा जाता है कि वे लोग विद्यालय के बच्चों को अपनी कहानी सुनाएँ। एक कथावाचक पाँच बच्चों को कहानी सुनाता है। बच्चों को जो अच्छा लगता है, वही कहानी सुनाने का कथावाचक प्रयास करता है। बच्चों को उनके परिवेश से जुड़े किसी विषय पर कहानी सुनाने के लिए कहा जाता है। जैसे– पशु-पक्षी के किस्से, परी कथा (Fairy tales), फल और फूलों की कहानियाँ

* डी-9, प्लॉट कल्पना एरिया, भुवनेश्वर-14

आदि। कथावाचक रामायण और महाभारत की कथाएँ, ऐन्द्राजालिक किस्से (Trickster tales), मिथक व पौराणिक कथाएँ (Myths), मंदिरों और सरोवरों पर आधारित दंतकथाएँ (local legends) आदि बच्चों को सुनाते हैं। गाँव के इतिहास, स्थानीय स्वतंत्रता सेनानी या समुदाय के किसी प्रेरक व्यक्ति के जीवन पर आधारित कहानी भी सुनाई जाती है।

बच्चों को एक पेपर और पेंसिल दी जाती है। कथावाचक तो दस-पंद्रह मिनट तक कहानी कहता है। अध्यापक बच्चों के अलग-अलग समूह बनाते हैं। प्रत्येक समूह में पाँच बच्चे और एक कथावाचक रहता है। यदि विद्यालय के बच्चों में चार-पाँच भाषा समूहों के बच्चे हों, तो भाषा के आधार पर भी समूह बनाए जाते हैं।

समूह बनाने के बाद कथावाचक कहानी सुनाता है। इसके बाद बच्चे अपनी भाषा में अपनी-अपनी कॉपी पर पेंसिल से कहानी लिखते हैं। कहानी लिखना खत्म होने के बाद अध्यापक बच्चों को एक-एक ड्रॉईंग पेपर और कुछ मोमी रंग (Crayon colours) या रंगीन पेंसिल देते हैं। अब बच्चे सुनी गई कहानी पर चित्र बनाते हैं। इसके लिए बच्चों को तीस मिनट दिए जाते हैं। बच्चे अपनी-अपनी कहानी और चित्र पर अपने-अपने नाम लिखते हैं। इससे उन बच्चों को यह एहसास होता है कि यह कहानी उन्होंने खुद लिखी है और यह चित्र भी उन्होंने खुद बनाया है।

जब सब बच्चे चित्र बना लेते हैं, तब अध्यापक प्रत्येक बच्चे की कहानी और चित्र की एक स्थान पर प्रदर्शनी लगाते हैं। इसके बाद अध्यापक और गाँव/समुदाय के लोग मिलकर बच्चों के चित्रों और कहानी पर फिर से चर्चा करते हैं। इस चर्चा से स्थानीय कथावाचक और माता-पिता को पता चलता है कि लिखी गई कहानी किसी भाषा के पठन से कम नहीं है और वह बच्चों की संस्कृति से जुड़ी हुई है। गाँव की कहानी जब लिखी जाती है, तो साहित्य बन जाता है।

अध्यापक और समुदाय द्वारा इस पर चर्चा करने का परिणाम यह होता है कि–

1. समुदाय और कथावाचकों का स्कूल से परिचय बढ़ता है। उनके ज्ञान की स्कूल ने सराहना की और उस ज्ञान को लिखा गया, यह उनके लिए गर्व की बात होती है।
2. 'कहानी' उत्सव में अध्यापक की भूमिका सहायक और आयोजक की होती है।

अध्यापकों को भी ज्ञात होता है कि ज्ञान सिर्फ़ किताबों में नहीं होता है, बल्कि गाँव के लोगों की मौखिक परंपरा में भी काफ़ी ज्ञान है, जिसका उपयोग कक्षा में शिक्षण प्रक्रिया में किया जा सकता है।

3. बच्चे जब इस प्रकार कहानी सुनाते हैं और उस पर चित्र बनाते हैं, तो यह जानकर वे खुशी से चहक उठते हैं कि अरे! यह तो परीक्षा नहीं थी, बल्कि यह तो मज़ेदार कहानी सुनाने का खेल था। चित्र बनाने की आज़ादी थी।
4. बच्चे अपने चित्रों में अपनी प्राथमिकता के अनुसार कहानी के चरित्र, स्थान और पृष्ठभूमि को रूपायित करते हैं। इन चित्रों से बच्चों की मनोभावना का विश्लेषण किया जा सकता है। इसके आधार पर भी बच्चों की चित्र कहानी से कहानी की रूपरेखा (Story map) बनाई जा सकती है।
5. एक ही कहानी के कई रूप (Variations) मिलते हैं, क्योंकि एक ही कहानी को कई बच्चों ने सुनने के बाद लिखा है। सब बच्चों ने अपनी-अपनी भाषा में अपनी भावना के अनुसार अपनी कहानी लिखी। किसी बच्चे ने दो अनुच्छेदों में कहानी लिखी, तो किसी ने केवल पाँच पंक्तियों में कहानी खत्म कर दी। इसका मतलब यह हुआ कि बच्चे एक कहानी को अपने-अपने नज़रिये से ही ग्रहण करते हैं और उसे अपने शब्दों में लिखते हैं।
6. बच्चों की कहानी और चित्रों के आधार पर शिक्षक कहानी के पोस्टर बना सकते हैं। भाषा और पर्यावरण अध्ययन को पढ़ाने के लिए इनका प्रयोग कर सकते हैं। अंतर्कक्षा संबंधों (Interclass relations) का विकास भी इससे कर सकते हैं।
7. कहानी के बाद एक चर्चा आरंभ होती है। इससे पढ़ना-लिखना, चित्र बनाना, पत्र लिखना, शब्द और वाक्य बनाना आदि भी सहज हो जाता है। अपनी ड्रॉईंग को कहानी के साथ पुस्तक में देखने के बाद कौन बच्चा ऐसा होगा, जो पढ़ने-लिखने और चित्र बनाने के लिए प्रेरित नहीं होगा।
8. सब कहानियों और चित्रों को इकट्ठा करके बच्चों के लिए पुस्तक भी बनाई जा सकती है, जिसमें कथावाचक तथा बच्चों के नाम और चित्र भी दिए जा सकते हैं। इस पुस्तक को देखने के बाद कथावाचक और गाँव के सयाने लोग जो कहानी सुनाया करते थे, यह जानकर कितने खुश होंगे कि उनका ज्ञान भी किताब में आ सकता है।
9. बच्चों के अंतर्मन में छिपी हुई 'सृजनकला', शब्द, चित्र और कहानी में वाचिक और लिखित रूप में उभर आती है। जब एक कहानीकार दस कहानियाँ कहता है, तो सोचिए कि हमारे देश में कितने गाँव हैं और एक गाँव से अगर दस कहानियाँ मिल जाएँ तो पूरे देश में कितनी कहानियाँ होंगी।

कथा, कहानी, चित्र और गीत– ये सब बच्चों को बहुत पसंद होते हैं। उनका मनोरंजन करने के साथ ही ये उन्हें ज्ञान भी देते हैं।

कहानी उत्सव के दौरान सुनाई गई एक मुंडा लोककथा यहाँ दी जा रही है–

बहुत पुरानी बात है। उस समय इस पृथ्वी पर सात सूरज थे। इस कारण बहुत गर्मी होती थी। इस गर्मी को कम करने के लिए सात मुंडा भाइयों ने सात धनुष बाण लिए और उनसे सात सूरज के ऊपर तीर चलाए। छह सूरज तो उसी समय मर गए, लेकिन एक सूरज बचकर भाग निकला।

सारी दुनिया में अँधेरा छा गया। अब क्या करें। सब पशु और पक्षियों ने एक सभा की। खरगोश ने कहा कि एक सूरज तो अभी भी बचा हुआ है। चलो, उसको बुलाते हैं।

उसकी बात मानकर हाथी, शेर, भालू आदि सबने सूरज को बुलाया, लेकिन सूरज नहीं आया। तब मुर्गे ने कहा, "मैं बुलाऊँ क्या?" सब लोग मुर्गे की बात सुनकर हँसने लगे और बोले, "अरे, तुम्हारे बुलाने पर वह आएगा क्या, जबकि हम सबके द्वारा बुलाने पर भी वह नहीं आया?" मुर्गा बोला, "चलो, कोशिश तो करते हैं!" इसके बाद मुर्गे ने

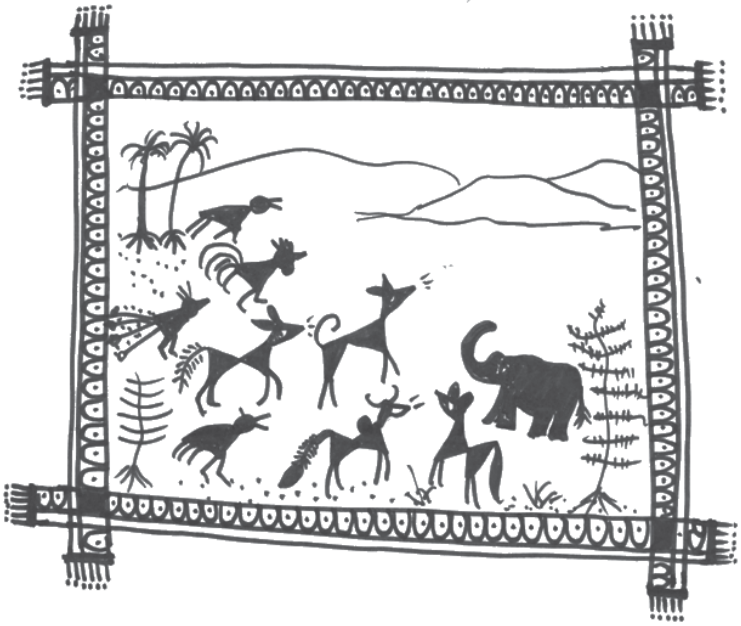

"कूकड़ूँऽ कूँ काक ऽ र् ऽ कक ऽ कूकड़ूँऽ कूँ..." करके ज़ोर से बाँग दी। पहाड़ की दूसरी तरफ़ से कुछ चमकता हुआ दिखाई दिया। मुर्गे ने एक बार और ज़ोर से बुलाया, "कूकड़ूँऽ कूँऽऽ काक ऽ र् ऽ कूकड़ूँऽ कूँ...।"

इस बार सूरज आधा दिखाई दिया। मुर्गे ने तीसरी बार फिर से बुलाया, "कूकड़ूँऽ कूँ ऽऽ काक ऽ र् ऽ ककऽ कूकड़ूँऽ कूँ।"

इस बार पूर्व दिशा के आकाश में सूरज पूरा दिखाई दिया। सब लोगों को तसल्ली मिली कि सूरज आ गया। उस दिन से ही इस एक सूरज की सभी लोग पूजा करते हैं। उसी दिन से जब मुर्गा "कूकड़ूँऽ कूँ ऽऽ काक ऽ कक ऽ र् ऽ कक ऽ कूकड़ूँऽ कूँ...," करके बाँग देता है, तो सुबह होती है और सूरज निकलता है।

शिक्षक के लिए कार्य– इस कहानी को हम एक पाठ बना सकते हैं, जिसमें भाषा, संख्या, पर्यावरण अध्ययन और समय का ज्ञान करा सकते हैं तथा पशु-पक्षियों के बारे में जानकारी दे सकते हैं।

❑❑❑